विनोद कुमार शुक्ल

दीवाल में एक खिड़की रहती थी

दीवाल में एक खिड़की रहती थी
खिड़की से एक दृश्य रहता था
एक झोंपड़ी, दो पगडंडी, एक नदी
और दो-एक तालाब रहते थे
एक आकाश के साथ सबका होना रहता था
लोगों का आना-जाना कभी कभी रहता था
पेड़-पक्षी रहते थे
खिड़की से सब कुछ रहता था
नहीं रहने में एक खिड़की खुली नहीं रहती थी
रहने में एक खिड़की खुली रहती थी
खिड़की से हटकर दीवाल में एक आदमी रहता था ।

विनोद कुमार शुक्ल, अतिरिक्त नहीं
दिल्ली, वाणी प्रकाशन 2000:111